Pro

Chapter 23

Hindi Interlinear

Reference: Hindi Easy-to-Read Version

1

כִּֽי־	תֵשֵׁב	לִלְחוֹם	אֶת־	מוֹשֵׁל	בִּין	תָּבִין	אֶת־	אֲשֶׁר	לְפָנֶֽיךָ׃
जब-	बैठेगा	खाने-के-लिए	–	शासक-के-साथ	समझकर	समझ	–	जो	सामने-तेरे
	H3427		H0854	H4910	H0995	H0995	H0853		H6440

जब तू किसी अधिकारी के साथ भोजन पर बैठे तो इसका ध्यान रख, कि कौन तेरे सामने है।

2

וְשַׂמְתָּ	שַׂכִּין	בְּלֹעֶךָ	אִם־	בַּעַל	נֶפֶשׁ	אָתָּה׃
और-रख	छुरी	गले-अपने-पर	यदि-	स्वामी	भूख-की	तू
	H7915	H3930		H1167	H5315	

यदि तू पेटू है तो खाने पर नियन्त्रण रख।

3

אַל־	תִּתְאָו	לְמַטְעַמּוֹתָיו	וְהוּא	לֶחֶם	כְּזָבִים׃
मत-	लालच-कर	स्वादिष्ट-भोजनों-की-उसके	और-वह	रोटी	झूठ-की
H0408	H0183	H4303	H1931	H3899	H3577

उसके पकवानों की लालसा मत कर क्योंकि वह भोजन तो कपटपूर्ण होता है।

4

אַל־	תִּיגַע	לְהַעֲשִׁיר	מִבִּינָתְךָ	חֲדָל׃
मत-	थक	धनी-होने-के-लिए	समझ-अपनी-से	रुक
H0408	H3021	H6238	H0998	H2308

धनवान बनने का काम करके निज को मत थका। तू संयम दिखाने को, बुद्धि अपना ले।

5

[התעוף]	(הֲתָעִיף)	עֵינֶיךָ	בּוֹ	וְאֵינֶנּוּ	כִּי	עָשֹׂה	יַעֲשֶׂה־	לוֹ	כְנָפַיִם	כְּנֶשֶׁר	[ועיף]	(יָעוּף)	הַשָּׁמָיִם׃	פ
[उड़ाएगा]	(उड़ाएगा)	आंखें-अपनी	उस-पर	और-नहीं-है-वह	क्योंकि	बनाते-हुए	बनाएगा-	अपने-लिए	पंख	गरुड़-जैसे	[और-उड़ेगा]	(उड़ेगा)	आकाश-की-ओर	प
				H0369					H3671	H5404			H8064	

ये धन सम्पत्तियाँ देखते ही देखते लुप्त हो जायेंगी निश्चय ही अपने पंखों को फैलाकर वे गरूड़ के समान आकाश में उड़ जायेंगी।

6

אַל־	תִּלְחַם	אֶת־	לֶחֶם	רַע	עָיִן	וְאַל־	[תתאו]	(תִּתְאָיו)	לְמַטְעַמֹּתָיו׃
मत-	खा	–	रोटी	बुरी	आंख-की	और-मत-	[लालच-कर]	(लालच-कर)	स्वादिष्ट-भोजनों-की-उसके
H0408		H0853	H3899			H0408	H0183	H0183	H4303

ऐसे मनुष्य का जो सूम भोजन होता है तू मत कर; तू उसके पकवानों को मत ललचा।

7

כִּי	כְּמוֹ־	שָׁעַר	בְּנַפְשׁוֹ	כֶּן־	הוּא	אֱכֹל	וּשְׁתֵה	יֹאמַר	לָךְ	וְלִבּוֹ	בַּל־	עִמָּךְ׃
क्योंकि	जैसे-	सोचता-है	प्राण-में-अपने	वैसे-	वह	खा	और-पी	कहता-है	तुझे	परंतु-हृदय-उसका	नहीं-	साथ-तेरे
	H3644	H8176	H5315		H1931	H0398	H8354	H0559			H1077	

क्योंकि वह ऐसा मनुष्य है जो मन में हरदम उसके मूल्य का हिसाब लगाता रहता है; तुझसे तो वह कहता — “तुम खाओ और पियो” किन्तु वह मन से तेरे साथ नहीं है।

8

פִּתְּךָ־	אָכַלְתָּ	תְּקִיאֶנָּה	וְשִׁחַתָּ	דְּבָרֶיךָ	הַנְּעִימִים׃
टुकड़ा-अपना-	खाया-तूने	उल्टी-करेगा-उसे	और-बर्बाद-करेगा	वचन-अपने	मीठे
	H0398	H6958	H7843	H1697	

जो कुछ थोड़ा बहुत तू उसका खा चुका है, तुझको तो वह भी उलटना पड़ेगा और वे तेरे कहे हुएआदर पूर्ण वचन व्यर्थ चले जायेंगे।

9

בְּאָזְנֵי	כְסִיל	אַל־	תְּדַבֵּר	כִּי־	יָבוּז	לִשְׂכֵּל	מִלֶּיךָ׃
कानों-में	मूर्ख-के	मत-	बोल	क्योंकि-	तुच्छ-करेगा	समझ-को	बातों-तेरी
	H3684	H0408	H1696		H0936	H7922	H4405

तू मूर्ख के साथ बातचीत मत कर, क्योंकि वह तेरे विवेकपूर्ण वचनों से घृणा ही करेगा।

10

אַל־	תַּסֵּג	גְּבוּל	עוֹלָם	וּבִשְׂדֵי	יְתוֹמִים	אַל־	תָּבֹא׃
मत-	हटा	सीमा	पुरानी	और-खेतों-में	अनाथों-के	मत-	जा
H0408	H5253	H1366	H5769		H3490	H0408	H0935

पुरानी सम्पत्ति की सीमा जो चली आ रही हो, उसको कभी मत हड़प। ऐसी जमीन को जो किसी अनाथ की हो।

11

כִּי־	גֹאֲלָם	חָזָק	הוּא־	יָרִיב	אֶת־	רִיבָם	אִתָּךְ׃
क्योंकि-	छुड़ानेवाला-उनका	शक्तिशाली	वह-	लड़ेगा	-	मुकदमा-उनका	तेरे-साथ
		H2389	H1931	H7378	H0853	H7379	H0854

क्योंकि उनका संरक्षक सामर्थ्यवान है, तेरे विरुद्ध उनका मुकदमा वह लड़ेगा।

12

הָבִיאָה	לַמּוּסָר	לִבֶּךָ	וְאָזְנְךָ	לְאִמְרֵי־	דָעַת׃	
ला	अनुशासन-की-ओर	हृदय-अपना	और-कान-अपना	वचनों-की-ओर-	ज्ञान-के	
H0935	H4148		H0241	H0561	H1847	

तू अपना मन सीख की बातों में लगा। तू ज्ञानपूर्ण वचनों पर कान दे।

13

אַל־	תִּמְנַע	מִנַּעַר	מוּסָר	כִּי־	תַכֶּנּוּ	בַּשֵּׁבֶט	לֹא	יָמוּת׃
मत-	रोक	बालक-से	अनुशासन	क्योंकि-	मारेगा-उसे	लाठी-से	नहीं	मरेगा
H0408	H4513	H5288	H4148		H5221	H7626	H3808	H4191

तू किसी बच्चे को अनुशासित करने से कभी मत रूक यदि तू कभी उसे छड़ी से दण्ड देगा तो वह इससे कभी नहीं मरेगा।

14

אַתָּה	בַּשֵּׁבֶט	תַכֶּנּוּ	וְנַפְשׁוֹ	מִשְּׁאוֹל	תַּצִּיל׃	
तू	लाठी-से	मारेगा-उसे	और-प्राण-उसके	अधोलोक-से	बचाएगा	
	H7626	H5221	H5315	H7585	H5337	

तू छड़ी से पीट उसे और उसका जीवन नरक से बचा ले।

15

בְּנִי	אִם־	חָכַם	לִבְּךָ	יִשְׂמַח	לִבִּי	גַּם־	אָנִי׃
पुत्र-मेरे	यदि-	बुद्धिमान-होगा	हृदय-तेरा	आनंदित-होगा	हृदय-मेरा	भी-	मैं
		H2449		H8055		H1571	H0589

हे मेरे पुत्र, यदि तेरा मन विवेकपूर्ण रहता है तो मेरा मन भी आनन्दपूर्ण रहेगा।

16

וְתַעְלֹזְנָה	כִּלְיוֹתָי	בְּדַבֶּר	שְׂפָתֶיךָ	מֵישָׁרִים׃	
और-उल्लसित-होंगे	अंतर्मन-मेरे	बोलने-पर	होंठ-तेरे	सीधी-बातें	
H5937	H3629	H1696	H8193	H4339	

और तेरे होंठ जब जो उचित बोलते हैं, उससे मेरा अन्तर्मन खिल उठता है।

17

אַל־	יְקַנֵּא	לִבְּךָ	בַּחַטָּאִים	כִּי	אִם־	בְּיִרְאַת־	יְהוָה	כָּל־	הַיּוֹם׃
मत-	ईर्ष्या-करे	हृदय-तेरा	पापियों-से	बल्कि	केवल-	भय-में-	यहोवा-के	सारा-	दिन
H0408	H7065		H2400			H3374	H3068	H3605	H3117

तू अपने मन को पापपूर्ण व्यक्तियों से ईर्ष्या मत करने दे, किन्तु तू यहोवा से डरने का जितना प्रयत्न कर सके, कर।

18

כִּֽי	אִם־	יֵ֣שׁ	אַחֲרִ֑ית	וְ֝תִקְוָתְךָ֗	לֹ֣א	תִכָּרֵֽת׃
क्योंकि	निश्चय-	है	भविष्य	और-आशा-तेरी	नहीं	काटी-जाएगी
		H3426	H0319		H3808	H3772

> एक आशा है, जो सदा बनी रहती है और वह आशा कभी नहीं मरती।

19

שְׁמַע־	אַתָּ֣ה	בְנִ֣י	וַחֲכָ֑ם	וְאַשֵּׁ֖ר	בַּדֶּ֣רֶךְ	לִבֶּֽךָ׃
सुन-	तू	पुत्र-मेरे	और-बुद्धिमान-हो	और-चला	मार्ग-में	हृदय-अपना
H8085			H2449	H0833	H1870	

> मेरे पुत्र, सुन! और विवेकी बनजा और अपनी मन को नेकी की राह पर चला।

20

אַל־	תְּהִ֥י	בְסֹבְאֵי־	יָ֑יִן	בְּזֹלֲלֵ֖י	בָשָׂ֣ר	לָֽמוֹ׃
मत-	हो	पियक्कड़ों-में-	दाखरस-के	पेटूओं-में	मांस-के	अपने-लिए
H0408	H1961		H3196		H1320	

> तू उनके साथ मत रह जो बहुत पियक्कड़ हैं, अथवा ऐसे, जो ठूंस—ठूंस माँस खाते हैं।

21

כִּֽי־	סֹבֵ֣א	וְ֭זוֹלֵל	יִוָּרֵ֑שׁ	וּ֝קְרָעִ֗ים	תַּלְבִּ֥ישׁ	נוּמָֽה׃
क्योंकि-	पियक्कड़	और-पेटू	गरीब-होगा	और-चीथड़े	पहनाएगी	नींद
			H3423	H7168	H3847	H5124

> क्योंकि ये पियक्कड़ और ये पेटू दरिद्र हो जायेंगे, और यह उनकी खुमारी, उन्हें चिथड़े पहनायेगी।

22

שְׁמַ֣ע	לְ֭אָבִיךָ	זֶ֣ה	יְלָדֶ֑ךָ	וְאַל־	תָּ֝ב֗וּז	כִּֽי־	זָקְנָ֥ה	אִמֶּֽךָ׃
सुन	पिता-अपने-की	जिसने	जन्म-दिया-तुझे	और-मत-	तुच्छ-कर	जब-	बूढ़ी-हो-जाए	माता-अपनी
H8085	H0001	H2088	H3205	H0408	H0936		H2204	H0517

> अपने पिता की सुन जिसने तुझे जीवन दिया है, अपनी माता का निरादर मत कर जब वह वृद्ध हो जाये।

23

אֱמֶ֣ת	קְ֭נֵה	וְאַל־	תִּמְכֹּ֑ר	חָכְמָ֖ה	וּמוּסָ֣ר	וּבִינָֽה׃
सच्चाई	खरीद	और-मत-	बेच	बुद्धि	और-अनुशासन	और-समझ
H0571	H7069	H0408	H4376	H2451	H4148	H0998

> वह वस्तु सत्य है, तू इसको किसी भी मोल पर खरीद ले। ऐसे ही विवेक, अनुशासन और समझ भी प्राप्त कर; तू इनको कभी भी किसी मोल पर मत बेच।

24

[גוֹל]	(גִּ֣יל)	[יגול]	(יָ֭גִיל)	אֲבִ֣י	צַדִּ֑יק	[יולד]	(וְיוֹלֵ֥ד)
[आनंद]	(आनंद)	[आनंदित-होगा]	(आनंदित-होगा)	पिता	धर्मी-का	[जन्म-देनेवाला]	(और-जन्म-देनेवाला)
H1523	H1523	H1523	H1523	H0001	H6662	H3205	H3205

חָ֝כָ֗ם	[וישמח־]	(יִשְׂמַח־)	בּֽוֹ׃
बुद्धिमान-को	[और-आनंदित-होगा-]	(आनंदित-होगा-)	उससे
H2450	H8055	H8055	H8055

> नेक जन का पिता महा आनन्दित रहता और जिसका पुत्र विवेक पूर्ण होता है वह उसमें ही हर्षित रहता है।

25

יִֽשְׂמַח־	אָבִ֥יךָ	וְאִמֶּ֑ךָ	וְ֝תָגֵ֗ל	יֽוֹלַדְתֶּֽךָ׃
आनंदित-होंगे-	पिता-तेरा	और-माता-तेरी	और-उल्लसित-होगी	जन्म-देनेवाली-तेरी
H8055	H0001	H0517	H1523	H3205

> इसलिये तेरी माता और तेरे पिता को आनन्द प्राप्त करने दे और जिसने तुझ को जन्म दिया, उसको हर्ष मिलता ही रहे।

26

תְּנָֽה־	בְנִ֣י	לִבְּךָ֣	לִ֑י	וְ֝עֵינֶ֗יךָ	דְּרָכַ֥י	[תרצנה]	(תִּצֹּֽרְנָה׃)
दे-	पुत्र-मेरे	हृदय-अपना	मुझे	और-आंखें-तेरी	मार्गों-मेरे	[प्रसन्न-हों]	(रखें)
H5414					H1870	H7521	H5341

> मेरे पुत्र, मुझमें मन लगा और तेरी आँखें मुझ पर टिकी रहें। मुझे आदर्श मान।

27

כִּֽי־	שׁוּחָ֣ה	עֲמֻקָּ֣ה	זוֹנָ֑ה	וּבְאֵ֥ר	צָ֝רָ֗ה	נָכְרִיָּֽה׃
क्योंकि-	गड्ढा	गहरा	वेश्या	और-कुआं	संकीर्ण	पराई-स्त्री
	H7745	H6013	H2181	H0875		H5237

क्योंकि एक वेश्या गहन गर्त होती है। और मन मौजी पत्नी एक संकरा कुँआ।

28

אַף־	הִיא	כְּחֶתֶף	תֶּאֱרֹב	וּבוֹגְדִים	בְּאָדָם	תּוֹסִף׃
हां-	वह	डाकू-जैसे	घात-में-लगती-है	और-विश्वासघातियों-को	मनुष्यों-में	बढ़ाती-है
H0637	H1931	H2863	H0693	H0898	H0120	H3254

वह घात में रहती है जैसे कोई डाकू और वह लोगों में विश्वास हीनों की संख्या बढ़ाती है।

29

לְמִי	אוֹי	לְמִי	אֲבוֹי	לְמִי	]מדונים[	(מִדְיָנִים)	לְמִי	שִׂיחַ	לְמִי	פְּצָעִים	חִנָּם	לְמִי	חַכְלִלוּת	עֵינָיִם׃
किसे	हाय	किसे	आह	किसे	[झगड़े]	(झगड़े)	किसे	शिकायत	किसे	घाव	बिना-कारण	किसे	लाली	आंखें
H4310	H0188	H4310	H0017	H4310	H4066	H4066	H4310	H7879	H4310	H6482	H2600	H4310	H2448	

कौन विपत्ति में है कौन दुःख में पड़ा है कौन झगड़े—टंटों में किसकी शिकायतें हैं कौन व्यर्थ चकना चूर किसकी आँखें लाल हैं वे जो निरन्तर दाखमधु पीते रहते हैं और जिसमें मिश्रित मधु की ललक होती है!

30

לַמְאַחֲרִים	עַל־	הַיָּיִן	לַבָּאִים	לַחְקֹר	מִמְסָךְ׃
देर-से-बैठनेवालों-को	पास-	दाखरस-के	आनेवालों-को	खोजने-के-लिए	मिश्रण
H0309		H3196	H0935	H2713	H4469

कौन विपत्ति में है कौन दुःख में पड़ा है कौन झगड़े—टंटों में किसकी शिकायतें हैं कौन व्यर्थ चकना चूर किसकी आँखें लाल हैं वे जो निरन्तर दाखमधु पीते रहते हैं और जिसमें मिश्रित मधु की ललक होती है!

31

אַל־	תֵּרֶא	יַיִן	כִּי	יִתְאַדָּם	כִּי־	יִתֵּן	]בכיס[	(בַּכּוֹס)	עֵינוֹ	יִתְהַלֵּךְ	בְּמֵישָׁרִים׃
मत-	देख	दाखरस-को	जब	लाल-होती-है	जब-	देती-है	[प्याले-में]	(प्याले-में)	आंख-अपनी	चलती-है	सीधी
H0408	H7200	H3196		H0119		H5414	H3599	H3563		H1980	H4339

जब दाखमधु लाल हो, और प्यालें में झिलमिलाती हो और धीरे—धीरे डाली जा रही हो, उसको ललचायी आँखों से मत देखो।

32

אַחֲרִיתוֹ	כְּנָחָשׁ	יִשָּׁךְ	וּכְצִפְעֹנִי	יַפְרִשׁ׃
अंत-में-उसका	सर्प-जैसे	काटती-है	और-नागिन-जैसे	डंक-मारती-है
H0319	H5175			

सर्प के समान वह डसती, अन्त में जहर भर देती है जैसे नाग भर देता है।

33

עֵינֶיךָ	יִרְאוּ	זָרוֹת	וְלִבְּךָ	יְדַבֵּר	תַּהְפֻּכוֹת׃
आंखें-तेरी	देखेंगी	पराई-स्त्रियां	और-हृदय-तेरा	बोलेगा	टेढ़ी-बातें
	H7200			H1696	H8419

तेरी आँखों में विचित्र दृष्य तैरने लगेगें, तेरा मन उल्टी—सीधी बातों में उलझेगा।

34

וְהָיִיתָ	כְּשֹׁכֵב	בְּלֶב־	יָם	וּכְשֹׁכֵב	בְּרֹאשׁ	חִבֵּל׃
और-होगा	लेटे-हुए-जैसे	बीच-में-	समुद्र-के	और-लेटे-हुए-जैसे	चोटी-पर	मस्तूल-की
H1961	H7901		H3220	H7901		H2260

तू ऐसा हो जायेगा, जैसे उफनते सागर पर सो रहा हो और जैसे मस्तूल की शिखर लेटा हो।

35

הִכּוּנִי	בַל־	חָלִיתִי	הֲלָמוּנִי	בַל־	יָדָעְתִּי	מָתַי	אָקִיץ	אוֹסִיף	אֲבַקְשֶׁנּוּ	עוֹד׃
मारा-है-मुझे	नहीं-	लगी-चोट-मुझे	पीटा-है-मुझे	नहीं-	जाना-मैंने	कब	जागूंगा-मैं	फिर-से	ढूंढूंगा-उसे-मैं	और
H5221	H1077		H1986	H1077	H3045	H4970	H6974	H3254	H1245	H5750

> तू कहेगा, “उन्होंने मुझे मारा पर मुझे तो लगा ही नहीं। उन्होंने मुझे पीटा, पर मुझ को पता ही नहीं। मुझ से आता नहीं मुझे उठा दो और मुझे पीने को और दो।”